सारथी

ज़रूरतमंद कलाकारों के मददगार

दोस्तो,

आज से 14 साल पहले 14 अगस्त 1988 को स्व0 कमला देवी चटोपाध्याय जी ने हमारे बुनकरों द्वारा बनाया गया तिरंगा हम सब बुनकर, दस्तकार, संगीतकार और लोक कलाकारों की सहकारी समितियों की नई पीढ़ी को सोंपा था। उस दिन से आज तक हम हर वर्ष एक ख़ास विषय लेकर स्वतंत्रता दिवस मनाते आये हैं । आज़ादी शब्द जीवन का अन्तिम लक्ष्य स्पष्ट करता है। यह सपनों को पूरा करने का सुझाव देता है।

लड़की हुई है, खुशियॉ मनाओ,
कला सिखाओ, हुनरमन्द बनाओ

एक ग्रामीण ग़रीब लड़की जब समाज के बन्धन को तोड़कर घर की चारदीवारी से बाहर कला के क्षेत्र में आई तो परिवार और समाज ने उसका बहिष्कार कर उसे परेशान करना शुरु किया। इस लड़की का दोष सिर्फ इतना था कि उसने पंडवानी कला सीखकर, आगे बढ़ने की कोशिश की। वह समाज द्वारा पैदा की गयी कठिनाईयों से डरी नहीं, बल्कि खुलकर हौसले के साथ आगे आई। पंडवानी कला में इस लड़की द्वारा किये गये योगदान के लिए महामहिम राष्ट्रपति ने पद्मश्री से सम्मानित किया। आज वही समाज उस लड़की को इज़्ज़त की दृष्टि से देखता है। यह लड़की छत्तीसगढ़ की पद्मश्री तीजन बाई है।

सदियों से समय–समय पर स्त्रियों ने परिवार, समाज अथवा देश के लिये अपनी कुर्बानी दी, अपना महत्व बतलाया। फिर भी समाज के एक बड़े वर्ग ने इन्हें बचपन से ही कभी पर्दे के रूप में, तो कभी खानदान की इज़्ज़त के नाम पर घरेलू कामों तक सीमित रखा। पारम्पारिक हुनर से जुड़े परिवारों में भी लड़कियों को कला से अलग रखा जाता है। जिसके कारण उनका व्यक्तित्व निखर कर सामने नहीं आ पाया। इतना ही नहीं लड़की–भ्रूर्ण की हत्या मॉ के गर्भ में ही कर दी जाती है। उसे जन्म लेने से पहले ही मार दिया जाता है, उसका पहला हक, जन्म लेना ही छीन लिया जाता है। हम प्रकृति के साथ–साथ कानुन का भी उलन्घन कर रहे हैं।

लड़कियों को भी जन्म लेने का, खेलने का, खाने का, पहनने का, पढ़ने का, और परिवार व समाज में बराबरी का अधिकार है। लेकिन समाजिक कुरीतियों के कारण उसकी कम उम्र में ही शादी कर दी जाती है और जल्द ही मॉ बन जाती है। जबकि वह ठीक प्रकार से खुद को व अपने शरीर को भी नहीं समझ पाती उसे कच्ची उम्र में ही बच्चे सम्भालने पड़ते हैं। ऐसी हालत में वह एक स्वस्थ परिवार व देश के बारे में क्या सोच पायेगी ? अगर हम उन्हें परिवार में बराबरी का हक व सारी सुविधायें दें, जिससे कि उसका व्यक्तित्व निखर सके तो वह एक अच्छी मॉ बन कर परिवार व देश की उन्नति में भागीदार हो सकती है, और अगर मौका मिले तो यह भी पी. टी. उषा, किरण वेदी, कल्पना चावला, और अरून्धति राय बनकर देश व परिवार का नाम रोशन कर सकती है। यह तभी हो सकता है जब समाज व परिवार उसे बचपन से ही उसका अधिकार और बराबरी का दर्जा दे।

सृजनता किसी की जागीर नहीं है, यह किसी भी इन्सान में हो सकती है। ज़रुरत है ईमानदारी से उसको परखना, बढ़ावा देना, जिससे लड़कियॉ घर के अन्दर न रहकर अपनी पारम्परिक हुनर के अलावा अन्य क्षेत्रों में आगे बढ़ सके। आज यदि हम अपने आंगन से ही लड़कियों को कुछ हुनर सीखा सकें तो हमारी लड़कियॉ भी दुनियॉ की लड़कियों की बराबरी

कर सकती है। जिससे कि हज़ारों तीजन बाई, गुमनामी की अंधेरी कोठरी में बन्द न रहकर बाहर आ सकें।

स्कूली शिक्षा के साथ–साथ पारम्परिक हुनर में दक्षता के उद्देश्य से सारथी ने चार वर्ष पूर्व यूनेस्को के सहयोग से शादीपुर निवासी कलाकारों की लड़कियों के साथ पेपर मैशी क्राफ्ट को सिखाना शुरू किया था, जिसके नतीजे बहुत अच्छे निकले कुछ लड़कियों के हाथ से डिजाईन इतने सुन्दर बने, जिसे नामी कलाकारों ने सराहा। इसी उद्देश्य से पुनः नये नमूनों, नये डिज़ाइनों को बना कर इसका बाज़ार ढूढ़ने के लिए सारथी भूले बिसरे कलाकार कोआपरेटिव के साथ सहयोग कर रही है, जिससे कि लड़कियॉ अपने पैरों पर खड़ी हो सकें। पर यह तभी सम्भव हुआ जब सारथी को कलाकार परिवारों का सहयोग मिला।

आइये आज हम कलाकार आगे बढ़कर लड़कियों के प्रति भेद–भाव तथा कुप्रथाओं को समाज से हटाने का नेतृत्व लेते हैं और शपथ लेते हैं कि लड़कियों को उनके बचपन के अधिकार दिलाने में सहयोग कर एक अच्छा नागरिक/कलाकार बनाने में मदद करेंगे।

जय हिन्द

राजीव सेठी

राजीव सेठी

श्रद्धान्जलि

शीला धर जी का जन्म एक मशहूर कायस्थ परिवार में हुआ जहॉ लड़कियों को छोटा–मोटा संगीत सिखाना केवल एक दहेज प्रथा से जुड़ा था परन्तु शीला जी इस प्रथा से बहुत आगे निकल आई– संगीत सिखा, लेखन की कला में निपूणता हासिल की, एक कला से दुसरी कला जोड़ी– एक महान संगीतकार और विशेषज्ञ होने के बावजूद उन्होंने हमेशा अन्जान और छोटे कलाकारों की संगत को आगे बढ़ाने का प्रयास किया। हमारे लिए शीला जी एक प्रेरणा स्रोत थीं। हम उनके आकस्मिक निधन पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

निमंत्रण

आप स्वतन्त्रता दिवस समारोह मनाने के लिए पारम्परिक कलाकारों की बस्ती में आमंत्रित हैं। स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर आप दिल्ली के विभिन्न फनकारों के साथ स्वतन्त्रता दिवस समारोह में शामिल होने की कृपा करेंगे।

कार्यक्रम :

14अगस्त 2001

10: 00 बजे प्रातः---------- झंडा रोहण, राष्ट्रगान

10: 05 बजे प्रातः---------- अतिथि भाषण

10: 15 बजे प्रातः---------- सांस्कृतिक कार्यक्रम

11: 00 बजे प्रातः---------- बस्ती में सामुदायिक कार्यक्रम ।

कार्यक्रम स्थल -:भूले बिसरे कलाकार वर्कशॉप, कठपुतली कालोनी, शादीपुर डिपो,
नई दिल्ली-110008 फोन न० : 570 61 89

शुभकामनाओं सहित

विनीत

राजीव सेठी

(राजीव सेठी)

सारथी–फलेट 4, शंकर मार्किट, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली –110001
फोन : 3411107, 3413744 फेक्स; 3414065 ई–मेल;sarthi@nda.vsnl.net.in